ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-3* April- 2021
Innovation The Research Concept

राजस्थान राज्य के पशुमेलों के कोरोना काल में रोक लगने से अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

Impact on Economy due to Banning of Cattle in Rajasthan State during Corona Period

Paper Submission: 28/03/2021, Date of Acceptance: 15/04/2021, Date of Publication: 20/04/2021

नीलू चतुर्वेदी
शोधार्थी
भूगोल,
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

राजस्थान की कृषिप्रधान अर्थव्यवस्था में पशुपालन व्यवसाय का विशेष महत्व है। राजस्थान के कृषकों के लिये पशुपालन न केवल जीविकोपार्जन का आधार है, बल्कि यह उनके लिये रोजगार और आय प्राप्ति का सुदृढ़ तथा सहज स्रोत भी है। राज्य के मरुस्थलीय और पर्वतीय क्षेत्रों में भौगोलिक और प्राकृतिक परिस्थितियों का सामना करने के लिये एकमात्र विकल्प पशुपालन व्यवसाय ही रह जाता है। भौगोलिक परिस्थितियाँ विषम होने पर भी राजस्थान की जलवायु पशुपालन व्यवसाय के लिये सर्वाधिक उपयुक्त है। चूकिं हमारे राजस्थान में अधिकांश भू–भाग पर मानसून आधारित कृषि की जाती है जो कि पूर्णतः वर्षा जल पर आधारित होती है इसलिय कृषि को मानसूनी जूआ भी कहा जाता है । यहाँ की भूमि में कैल्सियम कार्बोनेट की मात्रा अधिक होने के कारण कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार भी कृषि के साथ साथ पशुपालन करना लाभदायक होता है । क्योंकि वर्षा कम होने पर भी मानसून के प्रारम्भ होते ही चरागाहों में मानसूनी घासें झाड़ियाँ बढ़ने लग जाती है जिससे पशुपालन का कार्य किया जा सकता है और विषम परिस्थितियों में भी किसान को कुछ आय का स्त्रोत्र बना रहता है ।

पशुपालन को बाजार उपलब्ध करवाने हेतू राजस्थान में सभी जिलों और ग्रामीण स्तर पर लगभग 250 से अधिक पशु मेले लगाये जाते है जो कि किसानों के लिये, कला, संस्कृति, पशुपालन और पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। इनमें नगरपालिका और ग्राम पंचायतों की ओर से पशुपालकों को पानी, बिजली पशु चिकित्सा व टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। सरकार की ओर से इन मेलों में समय–समय पर प्रदर्शनी और अन्य ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। ज्यों ज्यों मानव जीवन विकास की लुभावनी दौड़ में आगे बढ़ता जा रहा है त्यों त्यों उसका ध्यान प्रकृति की अमुल्य धरोहर से हटता जा रहा है । इसलिये पशु मेलों का प्रभाव पूर्व काल से वर्तमान तक क्षिण होता हुआ जा रहा है । ऐसे समय में वर्ष 2020 के कोरोना काल में राजस्थान के पशु मेले भी शामिल हो गये जो किन्हीं कारणों से आयोजित नहीं किये जा सके जिसका ऋणात्मक व आर्थिक प्रभाव वर्तमान तथा भविष्य में प्रदर्शित होगा ।

Animal husbandry business has special importance in the agrarian economy of Rajasthan. Animal husbandry is not only the basis of livelihood for the farmers of Rajasthan, but it is also a strong and easy source of employment and income for them. In the desert and hilly regions of the state, the only option left is animal husbandry business to face the geographical and natural conditions. The climate of Rajasthan is most suitable for animal husbandry business even when the geographical conditions are uneven. Since monsoon based agriculture is done on most of the land area in our Rajasthan, which is completely based on rainwater, agriculture is also called monsoon yoke.Due to the high amount of calcium carbonate in the land here, according to agricultural scientists, it is beneficial to do animal husbandry along with agriculture. Because even when the rains are low, the monsoon grasses start growing in the pastures as soon as the onset of monsoon, due to which animal husbandry can be done and even in odd circumstances, the farmer remains a source of some income.In order to provide market to animal husbandry, more than 250 animal fairs are organized in all the districts and rural level in Rajasthan which are very important for the farmers in terms of art, culture, animal husbandry and tourism. In these, water, electricity, veterinary and vaccination facilities are provided to livestock owners on behalf of municipal and gram panchayats.Exhibitions and other informative programs are also organized in these fairs from time to time by the government. As human life continues to advance in the breathtaking race of development, its attention is diverging from the priceless heritage of nature. That is why the effect of animal fairs is being eroded from the past to the present. At such a time, during the corona period of 2020, animal fairs of Rajasthan were also included.Which could not be organized for any reason, the negative and economic impact of which will be displayed in the present and future.

मुख्य शब्द : कृषिप्रधान, पशुपालन, अर्थव्यवस्था, जीविकोपार्जन।
Farming, Animal Husbandry, Economy, Livelihoods

प्रस्तावना

राजस्थान राज्य नवीन पशुगणना 2020 के अनुसार देश में पशुपालक राज्यों में अग्रणी स्थान पर है। राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 55 फीसदी भाग मरूस्थल ही है। जिसमें 75 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है। 2019 पशुगणना के अनुसार प्रदेश में करीब 567 करोड़ मवेशी है। इसमें 139 गौवंश 136 भैस, 80 लाख भेड़ 208 करोड़ बकरी और करीब 2.13 लाख ऊंट शामिल है। देश के कुल दूध उत्पादन में राजस्थान का 12 प्रतिशत और ऊन उत्पादन में 31 प्रतिशत का योगदान है। राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पशुपालन का 10 फीसदी शेयर है। जबकि कृषि और पशुपालन पूरी एस जीडीपी में 22 प्रतिशत का योगदान करते हैं। इसके अलावा तथ्य है कि प्रदेश के 52 फीसदी किसानों के पास एक हेक्टेयर से कम कृषि भूमि है। अल्प वर्षा काल या गैर कृषि काल में वे पशुपालन के भरोसे ही जीवन उपज करते हैं। इस कारण राजस्थान के लिए कहना उचित है कि यहां का पशुधन किसानों की विपरीत स्थिति में भी उन्हें आवाहत्या नहीं करते हैं। राज्य में 2013–14 में श्रीमती साचार पशु मेला झालारापाटन कर दिया गया था। जो अभी तक भी पूर्ण रूपेण अनुचित ही किया जा सका है।

इसी तरह गोगामेड़ी जिले में 42376 रूपये, वीर तेजाजी पशुमेला पशुधन 27761 रूपये श्री जसवत प्रदर्शनी एवं पशु मेला जयपुर 97835 रु. कार्मिक पशु मेला पुष्कर (अजमेर) 32936रू, चन्द्रमाला 13432रू. रामरेवपशु मेला (नागौर) 41570रू. महाशिवरात्रि पशुमेला 147948रू मल्लीनाथ पशु मेला तिलवाड़ा 191774 रूपये में मेला मेडल सिटी नागौर 9286रू द्वारा जो पांच वर्ष पश्चात् 2017–18 में घटकर गोगामेडी में 25686रू तेजाजी पशुमेला 3193 जसवंत प्रदर्शनी जयपुर 61648रू कार्तिक पशुमेला पुष्कर 5908रू चन्द्रभागा पशुमेला झालावाड़ 7244 रूपये, रामदेव पशु मेला नागौर 6585रूपये महाशिवरात्रि प मेला 533रू. मल्लीनाथ पशु मेला 11584 बलदेव पशु मेला मेड़ता सिटी 1403) रहा।

वर्ष 2017–18 का राज्य पशुमेला रेवज्यु सबसे कम महाशिवरात्रि पशु मेला करौली तथा सबसे अधिक रेवज्यु जसवंत प्रदर्शनी पशु मेला जयपुर में रहा।

परन्तु कोरोना काल पशुमेलों से प्राप्त राज्य रेवज्यु की भी एवं भारी हानि के रूप में सिद्ध हुआ। जहां साम्राज्य जनजीवन का असहज उतार–चढ़ाव सामने है। कई बड़े व्यापार अपनी वर्तमान स्थिति में निम्नतम स्तर पर आ गये है? मानव के जीवन को ऐसी विपरीत परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा है। वहीं राजकोष में इस हानि का होना अनुचित प्रभाव लायेगा।

राज्यस्तरीय पशुमेलों से पशुपालकों की आय

पशुमेले	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18
सागर पशु मेला झालावाड	-	-	-	-	-
गोगा मेडी मेला हनुमानगढ	7862	867.59	921.11	991.58	772.40
वीरतेजाजी पशुमेला नागौर	354-98	237-33	280.18	233.48	169.55
जसवंत प्रदर्शनी जयपुर	599-7	2225.99	78394	113519	1091
कार्तिक पशुमेला (पुष्कर)	876-4	91149	70596	70575	131.05
चन्द्रभागा पशुमेला	363.54	484.22	524.35	12921	256.96
रामदेव पशु मेला नागौर	1217.32	918.49	635.36	390.61	264.27
महाशिवरात्री पशु मेला करौली	322.84	806.55	104.79	74.87	46.58
मल्लीनाथ पशुमेला तिलवाडा	844.75	745.63	365.72	255.42	158.80
बलदेव पशुमेला मेडता	104.15	251.15	199.86	25.95	38.00
योग	5505.88	7498.44	4521.27	3942.01	2928.61

स्त्रोत: राज्य पशुपालन विभाग

पशुमेलों में पशुधन व्यवसाय की संभावनाएं

पशुमेलों में अनेक नस्ल के पशुधन को प्राप्त करना सरल होता है क्योंकि पशुमलों में सभी प्रकार की नस्ल आसानी से प्राप्त हो जाती हैं।

1. पशुमेलों में उत्तम प्रकार की वैज्ञानिक पशु किस्मों की पहुंच पशुपालकों तक सरलता से की जा सकती है।
2. वर्तमान की मांग दूध, मास, ऊन, चमड़ा, हड्डियों सभी की है। परन्तु यह मांग विश्व स्तर तक ही सीमित रह जाती है? इसे स्थानिक छोटे पशुपालकों तक लाया जाना अनिवार्य है।
3. चमड़ा उद्योग का भविष्य अत्यधिक आयगत बनाया जा सकता है। परन्तु भारत में आयातित चमड़े की वस्तुओं को प्रयोग भरसक बड़ रहा है। जिससे राष्ट्रीय आय विदेशों में आकर्षित है। इस हेतु देश में चमडा उद्योग के उच्च प्रबंधन का कार्य कर नवीन दिशा दी जा सकती है। इसका प्रचार पशुमेलों से करना सरल है।
4. पशुधन कृषक के लिए मौसमिक विपरीत परिस्थिति नौका तुल्य कार्य करते है। परन्तु अच्छी नस्ल के पशु का ध्यान रखना सभी पशुपालकों को नहीं आता इसके पशुमेलों में प्रशिक्षण दिलवाकर।

राज्य के प्रमुख पशु मेलों में 2018 में पशुपालकों को प्राप्त आय का विवरण सबसे कम आय बलदेव पशुमेला मेड़ता से 38.00 लाख प्राप्त की गयी तथा पशुपालकों को सर्वाधिक आय जसवंत प्रदर्शनीय जयपुर से 1091 लाख प्राप्त की गयी।

इसके अतिरिक्त, वीर तेजाजी पशुमेला परबतसर नागौर 169.55 लाख गोगामेडी हनुमानगढ़ से प्राप्त आय 772.40 लाख थी कार्तिक पशुमेला पुष्कर 131.05 लाख चन्द्रभाग पशुमेला 256.96 रामदेव पशुमेला नागौर 264.27 लाख महाशिवरात्री पशुमेला करौली 46.50 लाख मल्लीनाथ पशुमेला तिलवाड़ा (बाडमेर) 158.80 लाख लाखों की आय तथा लेन–देन के स्थल रहे ये पशुमेले कोरोना काल में मात्र एक अकाल की स्थली बन गये पशुपालकों के ऊपर यह संकट अचानक आ गया साथ ही तीज त्यौहार पर होनेवाली आ गया साथ ही तीज त्योहार पर होने वाली पशु विक्रिया ठप्प पड़ गयी नियमित काम आने वाली मांस मण्डिया नंद ऊन का निर्यातमा उद्योग धराशायी हो गया।

1. पशुपालक का नवीन पशुधन का पूर्वत आश्रित होता हैं वो इस अपनी पूंजी के रूप में कभी भी आवश्यकता पड़ने पर इस्तेमाल कहते है। वहीं नियमित जीवन शैली में मानव पशुहत्यारों को अपनी काम में लेता रहता
2. कोटी को बाजार की उपलब्धता होना अनिवार्य है। जो राज्य में लगने वाले पशुमेलों से प्राप्त होता है।
3. वर्ष 2013–2014 में किसानों को पशुमेलों में होने वाले व्यापार से होने वाली आय 5505.88 लाख थी जो वर्ष 2017–2018 में मात्र 292861 रह गई यह पशुमेले राज्य में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी मेलजोल को बढ़ावा देते है। समीप के राज्य बहुत अधिक हिस्सेदारी निभाते है। मानव जीवन में व्यापार को ही सामाजिक समावेश का श्रेय सिद्ध सभ्यता काल से दिया जाता रहा है? जिसका आधार व्यापार ही होता था।

साथ ही राज्य के पशुमेलों में उत्तम पशु नस्लों का पता चलता है। जिससे पशुपालन व्यवसाय को अधिक उन्नत व विकसित करने का स्वर्णित अवसर प्राप्त होता है।

1. परंतु 2014–2018 तक पांच सालों में यह मेले अपने पशुपालकों की आय में कमी को दिखा रहे है। उसमें भी चिन्ता का विषय तक अधिक गहरा जाता रहे है। उसमें भी चिन्ता का विषय तब अधिक गहरा जाता जब पूरे विश्व को कोरोना जैसे भयावह संकट ने घेर लिया हो और पशुमेलों का आयोजन ही न किया जा सकता हो।

राज्यस्तरीय पशु मेले वर्षवार तुलनात्मक विवरण (आय रूपयों में)

क्र.	नाम पशु मेले	2013–14	2014–15	2015–16	2016–17	2017–18
1	श्रीमती सागर पशु मेला झालारापाटन (झालावाड)	-	-	-	-	-
2	श्री गोगामेडी पशु मेला गोगामेडी हनुमानगढ़	42376	40530	40530	29744	25686
3	श्री वीर तेजाजी पशु मेला परबतसर नागौर	27761	8726	8856	4433	3197
4	श्री जसवंत प्रदर्शनी एवं पशु मेला जयपुर	97835	52210	61443	106043	61648
5	श्री कार्तिक पशु मेला पुष्कर अजमेर श्री चन्द्रभागा पशुमेला झालारापाटन झालावाड	32936	39114	22661	19514	6908
7	श्री बाबा रामदेव पशु नागौर	41570	31534	16292	10772	6585
8	श्री महाशिवरात्रि पशु मेला, करौली	147948	65766	6187	4258	533
9	श्री मल्लीनाथ पशु मेला तिलवाड़ा (बाड़मेर)	191774	169839	8357	5563	11584
10	श्री बलदेव पशु मेला मेड़ता सिटी नागौर	9286	9199	5569	968	1403
	योग	562542	379993	184290	188166	124788

राज्य के प्रमुख पशुमेलो का राज्य को कुल रेवज्यु आय 2013–2014 में 562542 जो 2017–18 में घटकर 124988रू हो गया है। 5 वर्षों में इतनी रेवज्यु गिरावट से यह पता चलता है कि राज्य में पशुमेलों जैसे सांस्कृतिक आयोजनों की और समाज का रूझान कम होता जा रहा है।

राज्य व पशुमेले

राजस्थान राज्य में प्रमुखतः 10 अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पशुमेले तथा लगभग 250 राज्य स्तरीय पशुमेले होते है। पशुपालकों तथा उत्तम नस्ल के व्यापारियों हेतु यह खुला बाजार है ?

राज्य में पशुमेले का आयोजन पशुओं के खुले व्यापार को बढ़ावा देने के साथ–साथ उनकी उत्तम नस्लों के प्रति पशुपालकों को अवगत करवाना तथा कम समय सीमा में अच्छी नस्लों का स्थान पशुपालकों के पशुपालन व्यवसाय में सुनिश्चित करना है। जिससे पशुधन की वृद्धि तथा अनेक उत्पादों के गुणवत्ता में सुधार किया जा सके।

परन्तु 2020 की कोरोना काल की विपरीत परिस्थितियों में सरकारी लॉक डाउन के आदेशों के अनुपालना हेतु पशुमेलों का आयोजन रोक दिया गया। इस परिस्थिति में पशु व्यापारियों का जो अमूल्य व्यापारिक बाजार था वह बंद हो गया जिसके चलते उसे भांति मात्र नुकसान भुगतना पड़ा। उनके व्यापारिक पशु मेले नागौर

पशुमेला न होने से क्षेत्रीय बकरी पालन व व्यवसायिक रूप से फलीभूत मीठ उद्योग धराशायी हो गया है।
मकराना की प्रसिद्ध बकरा मंडी में ईद पर भी कोरोना की धारणाओं तथा आर्थिक तंगी के कारण मास व्यापार ठप पढ़ा रहा। क्षेत्रीय सर्वेक्षण कर पशुपालकों से ज्ञात हुआ है कि अच्छी नस्ल के एक साल तक के बकरे पर करीब 30 हजार रूपये खर्चा होता है? मण्डी में पिछले वर्षों में एक बकरा पालक 45–55 हजार तक एक बकरे को बेच कर मुनाफा कमाता था। किन्तु इस वर्ष का मूल्य आधा प्राप्त हुआ। 15 हजार में ही सौदे किये गये। पूर्व वर्षों में मीट का स्थानिक भाव 500 से 600रू. किलो रहा करता था, जो छूटकर वर्ष 2020 में मात्र 250–300रू प्रति किलो ही रहा।

प्रत्येक वर्ष एक पशुपालक औसतन 40–50 बकरे बेचता था जो इस वर्ष 10 बकरे ही रह गया। कोरोना काल ने इनके आर्थिक क्षेत्र पर गहरा असर छोड़ा।

परिकल्पना

1. पशुमेलों की आकस्मिक रोक से पशु नस्लों को भारी नुकसान।
2. पशु विपणन में भारी मात्रा में कटौती से पशुपालकों की आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव
3. पशु उत्पादों के व्यापारिक महत्व का क्षय ।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अचानक फैलने वाली स्वास्थ्य आपदाओं के ऋणात्मक असर से पशुधन को संरक्षण करना।
2. पशुपालकों के हित की बीमा योजनाओं को संचालित करने हेतु नयी प्रबन्धन नीतियां बनाना।
3. वर्ष में एक बार होने वाले पशु व्यापार के स्थान पर इस व्यापार को वर्ष पर्यन्त क्रियान्वित किये जाने के नये विकल्प व स्त्रोत खोजना।
4. पशुधन के प्रति नवीन विकसित सरकारी नीतियों का निर्माण व नियमन करना।
5. पशुधन वर्तमान समय में अनदेखा किया जाता है। जो भावी विपत्तियो का आधार बनेगा। इस हेतु पशुपालकों के लिए प्रोत्साहन पूर्ण योजनाएं बनाना।

पशुधन का अर्थव्यवस्था में योगदान

राजस्थान राज्य में भेड़ बकरियों और ऊंटों के सहारे हजारों परिवारों की आमदनी होती है। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था की धुरी के रूप में कार्य करते है। परन्तु कोरोना संकट जैसी महामारी के कारण पशुपालकों की आमदनी की स्थिति बिगड़ गयी है। जहाँ इस काल में देश की औद्योगिक व्यापारिक, बैंकिंग सभी इकाईया बंद पढ़ गयीवहीं मानव का नियमित जीवन भी पूर्णरूप में ठहराव की स्थिति में आ गया। ऐसी परिस्थिति में कृषि एकमात्र औषधिय गुण के रूप में कार्यरत इकाई रही। परन्तु सभी किसानों की कृषि जन्य उपज अधिक नहीं होती। इस कारण उनका एक बड़ा भाग आय के लिए पशुधन पर आश्रित रहता है। मानव का जीवन पशुओं से दूध, ऊन चमड़े का प्रयोग करता है, दूध कोरोना काल में व्यवसायिक इकाई का अंग बना रहा परन्तु पशुओं का क्रय विक्रय, मांस ऊन सभी का व्यापार रूक गया। राज्य के सभी पशुमेलों पर रोक लगा दी गई जिस कारण पशु व्यापार तथा नवीन नस्लों के आदान प्रदान की एक बड़ी खेप पर प्रत्यक्षतः अंकुश लग गया। मुर्गीपालन व्यवसाय भी इस काल की अप्रत्याशित मार से अछूता न रह सका।

निष्कर्ष

जनमानस में संक्रमण के भय से मांस उपभोग में निम्नता आयी। लेकिन राज्य में पशुपालन पर बढ़ती उदासीनता व अनदेखी अभिन्न खतरों की कसौटी को सामने ला सकती है। मानव जीवन यथार्थ में निपुण होकर प्रकृति की अनमोल धरोहर का रक्षण करने में असमर्थ प्रतीत हो रहा है। जबकि इसका भीषण परिणाम स्वाइन फ्लु, बर्ड फ्लु कोरोना काल जेसे विपरीत तथा मानव हत्या समय में और भी बढ़ जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Taubenberger JK, Morens DM. 1918 influenza: the mother of all pandemics. Emerg Infect Dis. (2006) 12:15-22. doi: 10.3201/eid1209.05-0979*
2. *Dawood FS, Iuliano AD, Reed C, Meltzer MI, Shay DK, Cheng PY, et al. Estimated global mortality associated with the first 12 months of 2009 pandemic influenza A H1N1 virus circulation: a modelling study. Lancet Infect Dis. (2012) 12:687-95. doi: 10.1016/S1473-3099(12)70121-4*
3. *Neumann G, Kawaoka Y. Predicting the next influenza pandemics. J Infect Dis. (2019) 219(Suppl. 1):S14-S20. doi: 10.1093/infdis/jiz040*
4. *Allen T, Murray KA, Zambrana Torrelio C, Morse SS, Rondinini C, Di Marco, et al. Global hotspots and correlates of emerging zoonotic diseases. Nat Commun. (2017) 8:1124. doi: 10.1038/s41467-017-00923-8*
5. *Marchant-Forde JN. The science of animal behavior and welfare: challenges, opportunities and global perspective. Front Vet Sci. (2015) 2:16. doi: 10.3389/fvets.2015.00016*
6. *Chantziaras I, Boyen F, Callens B, Dewulf J. Correlation between veterinary antimicrobial use and antimicrobial resistance in food producing animals: a report on seven countries. J Antimicrob Chemoth.(2014) 69:827-34. doi: 10.1093/jac/dkt443*
7. *World Health Organization.*
8. *Implementation of the International Health Regulations (2005). Report of the Review Committee on the Functioning of the International Health Regulations (2005) in Relation to Pandemic (HINI) 2009. (2011).*
9. *कोविड दृ 19 दृ विनियामक पैकेज (संशोधित), आरबीआई, मार्च 27, 2020*
10. *https://www.rbi.org.in/Scripts/Notification User. aspx?Id=11835& Mode= 0*
11. *एफआईआई और डीआईआई कारोबार की सक्रियता मार्च 20 मनी कंट्रोल https://www-moneycontrol-com/stocks/ Marketstats/ fii_dii_activity / index php*